समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 28 September 2026

क्रिकेट के दिग्गजों के बेटे नहीं कर पाए पिताओं जैसा कमाल

Publisher

Published on 30 Oct 2025

भारतीय क्रिकेट ने हमेशा से ही अपनी धाक और खेल भावना के लिए दुनिया में अलग पहचान बनाई है। इस मैदान ने हमें कई महान खिलाड़ी दिए हैं, जिन्होंने खेल की दुनिया में अपनी छाप छोड़ी और लाखों फैंस के दिलों में अमिट छवि बनाई। लेकिन जब बात उनके बेटों की होती है, तो हमेशा उम्मीद के अनुरूप परिणाम नहीं मिलते।

भारतीय क्रिकेट में कई दिग्गज खिलाड़ियों के बेटे मैदान में उतरे, लेकिन उन्हें अपने पिता की तरह सफलता नहीं मिली। क्रिकेट का खेल केवल टैलेंट नहीं मांगता, बल्कि मानसिक दृढ़ता, समय के अनुसार खुद को ढालने की क्षमता और लगातार मेहनत भी जरूरी होती है। कई बार बेटे इन सभी बातों में पिता से पिछड़ जाते हैं।

एक उदाहरण हैं भारतीय क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर। सचिन ने क्रिकेट की दुनिया में रिकॉर्ड्स का ऐसा खजाना जमा किया कि हर कोई उनकी तुलना अपने खेल से करता है। लेकिन उनके बेटे अरनव तेंदुलकर ने क्रिकेट में उतनी पहचान नहीं बनाई। अरनव का नाम कभी हेडलाइन में नहीं आया, और वे पिता के स्तर तक नहीं पहुँच सके।

इसी तरह, महान गेंदबाज अनिल कुंबले के बेटे भी क्रिकेट की ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाए। कुंबले ने भारतीय क्रिकेट के लिए कई रिकॉर्ड बनाए, लेकिन उनके बेटे की क्रिकेट यात्रा उतनी सफल नहीं रही। यह दिखाता है कि पिता का नाम और अनुभव एक बेटे के लिए हमेशा मददगार नहीं होता।

क्रिकेट के मैदान में यह कहानी केवल भारतीय खिलाड़ियों तक ही सीमित नहीं है। विश्व स्तर पर भी कई दिग्गज खिलाड़ियों के बेटे अपने पिता की ऊँचाइयों तक नहीं पहुंच सके। यह खेल की कठिनाइयों और उच्च प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है। कई बार खिलाड़ी का व्यक्तित्व, फिजिकल फिटनेस या मानसिक मजबूती उसके करियर को प्रभावित कर देती है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि कई खिलाड़ियों के बेटे ने अपने पिता के नाम की वजह से अधिक दबाव महसूस किया। पिताजी की महानता के साये में खड़ा होना आसान नहीं होता। यह दबाव कई बार खिलाड़ियों के प्रदर्शन को प्रभावित करता है और उन्हें मैदान

पर फेल कर देता है।

लेकिन कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं, जिन्होंने पिता के अनुभव से सीख लेकर अपनी अलग पहचान बनाई। वे सीधे पिता की छाया में नहीं रहे, बल्कि अपनी शैली और खेल से दर्शकों को प्रभावित करने में सफल हुए। यही साबित करता है कि क्रिकेट सिर्फ टैलेंट और नाम की दौड़ नहीं है, बल्कि मेहनत, रणनीति और मानसिक संतुलन का खेल है।

भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के लिए यह एक प्रेरक कहानी भी है। यह दिखाती है कि पिता का नाम एक मार्गदर्शन हो सकता है, लेकिन सफलता के लिए मेहनत और लगन की जरूरत हमेशा रहती है। क्रिकेट का मैदान हर खिलाड़ी को अपनी छवि बनाने का अवसर देता है, और इतिहास में नाम बनाने के लिए लगातार सुधार और अभ्यास जरूरी होता है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.